राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

(मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार के तत्त्वावधान में संचालित)

वार्षिक प्रतिवेदन

1991 - 1992

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
नई दिल्ली - 110058
पुस्तकालय

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
ए-40, विशाल एन्क्लेव राजा गार्डन
नई दिल्ली-27

प्रथम अध्याय

परिचय

केन्द्रीय संस्कृत परिषद् की अनुशंसा के फलस्वरूप देश में संस्कृत के विकास एवं उन्नति के लिये सोसायटी रजिस्ट्रेशन एक्ट 1111-1860 के अन्तर्गत स्वायत्तशासी संस्था के रूप में अक्टूबर सन् 1970 में राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान की स्थापना हुई । इसके खर्च का पूरा भार भारत सरकार वहन करती है । संस्कृत भाषा के प्रचार एवं विकास के लिए एक शीर्षस्थ संस्था के रूप में यह कार्य कर रहा है । सन् 1956 में संस्कृत भाषा एवं शिक्षण के विभिन्न क्षेत्रों में प्रचार-प्रसार एवं प्रगति के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा गठित संस्कृत आयोग की विभिन्न संस्तुतियों के समुचित कार्यान्वयन भी इसके महत्त्वपूर्ण कार्यक्षेत्र हैं ।

जैसा कि मेमोरेन्डम ऑफ एसोसिएशन से स्पष्ट है कि राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान का प्रमुख उद्देश्य संस्कृत शिक्षा एवं शोध का विकास, प्रचार एवं प्रोत्साहन करना है । साथ ही अधिगृहीत केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठों की प्रबन्ध व्यवस्था के लिये केन्द्रीय, प्रशासकीय एवं सहयोग स्थापित करने वाली संस्था के रूप में कार्य करना भी इसका उद्देश्य है ।

कार्यक्रम और क्रियाकलाप

उद्देश्यों की पूर्ति हेतु संस्थान को निम्न निर्दिष्ट कार्यक्रमों एवं क्रियाकलापों को पूरा करना होता है :--

अनेक राज्यों में केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ की स्थापनाकरना ।

देश के विभिन्न भागों में संस्कृत के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था करना ।

स्नातक, स्नातकोत्तर एवं विद्यावारिधि(पी-एच. डी) स्तर पर प्राचीन पद्धति द्वारा संस्कृत का अध्यापन-कार्य सम्पादित करना ।

स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर पर अध्यापकों का प्रशिक्षण कार्य संचालन करना ।

अध्यापक-प्रशिक्षण एवं शोध की उपाधियों के साथ ही सैकेण्डरी, स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं के स्तर की परीक्षाओं का संचालन करना ।

संस्कृत वाङ्मय के विभिन्न क्षेत्रों में शोध कार्य का संचालन करना, परस्पर अभिरुचि वाली अन्य संस्थाओं के साथ सहयोग स्थापित करना ।

संस्कृत की पाण्डुलिपियों का संग्रह एवं पुस्तकालयों का निर्माण कार्य सम्पन्न करना ।

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृत-शिक्षा-संगठन की भारतीय शाखा के रूप में कार्य करता है तथा विदेश में स्थित, प्राच्य विद्या एवं शिक्षा केन्द्रों के साथ सांस्कृतिक-कार्यक्रम-विनिमय का क्रियान्वयन करता है ।

अध्यापन

श्री लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली और केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ तिरुपति जो संस्थान के अंगीभूत विद्यापीठ थे, उन्हें इस वर्ष मानित विश्व विद्यालय का स्तर दिया गया और वे स्वायत्तशासी हो गए । फलस्वरूप केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठों की संख्या आठ से घट कर छः हो गयी है, लेकिन राजीव गांधी केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ श्रृंगेरी (कर्नाटक) की स्थापना से इनकी संख्या सात हो गयी है । अभी संस्थान के अन्तर्गत सात विद्यापीठ हैं ।

शिक्षकों का प्रशिक्षण

सात में से छः विद्यापीठों में प्रायोगिक शिक्षण पर विशेष बल देते हुए एक वर्षीय शिक्षक प्रशिक्षण दिया जाता है । सत्रान्त में बी. एड के समकक्ष शिक्षा शास्त्री की उपाधि प्रदान की जाती है ।

शोध

सभी विद्यापीठों में छात्रों को शोध कार्य हेतु प्रवेश की सुविधा प्रदान की गई है, जब कि एक विद्यापीठ संस्कृत के चुने हुए विषयों पर केवल शोध के उद्देश्य से ही संचालित किया गया है । सफलतापूर्वक शोध कार्य की समाप्ति हो जाने पर शोध छात्रों को विद्यावारिधि की उपाधि प्रदान की जाती है । जो पी-एच. डी के समकक्ष मानी जाती है । गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ में केवल शोध और प्रकाशन ही होता है ।

प्रकाशन

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान "संस्कृत विमर्श" और गंगानाथ झा रिसर्च जर्नल नाम की दो सम्मानित पत्रिकाओं को प्रकाशित करता है, जिनमें प्रथम जर्नल का प्रकाशन संस्थान स्वयं करता है और अन्य गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित किये जाते हैं । इसके साथ ही समुचित सम्पादकीय विचारों एवं टीकाओं के साथ दुर्लभ पाण्डुलिपियों का प्रकाशन भी इस विद्यापीठ ने हाथ में लिया है ।

स्वरूप एवं प्रकाशन

साधारण सभा संस्थान की नीति निर्धारित करने वाली समिति है । संस्थान की साधारण सभा के 22 सदस्यों की परिशिष्ट "क" में प्रदर्शित की गई है ।

शासी परिषद राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान की कार्यकारिणी परिषद है । वर्तमान वित्तीय वर्ष के लिए शासी परिषद का गठन परिशिष्ट "ख" में दिया गया है । शासी परिषद को निम्नलिखित समितियों की सहायता प्राप्त है :-

1. अर्थ समिति 2. विद्वत्परिषद 3. परीक्षा समिति 4. शोध समिति 5. प्रकाशन समिति

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान में चार अनुभाग काम करते है :- शैक्षणिक अनुभाग, परीक्षा अनुभाग, प्रशासन और वित्त विभाग । शैक्षणिक की तीन शाखाएं हैं : शैक्षणिक, शोध एवं प्रकाशन और पत्राचार पाठ्यक्रम । परीक्षा अनुभाग को छोड़कर प्रत्येक अनुभाग एक-एक उप-निदेशक के निर्देशन में काम करता है । ये सभी अधिकारी संस्थान के निदेशक के कार्यों में सहायता करते हैं जो प्रमुख कार्याधिकारी होता है और साधारण सभा द्वारा अनुमोदित कार्यक्रमों एवं नीतियों के क्रियान्वयन के लिए उत्तरदायी होता है ।

संस्थान के निदेशक की नियुक्ति भारत सरकार द्वारा की जाती है । जनवरी, 1991 से संयुक्त सचिव (संस्कृत) निदेशक है ।

शैक्षणिक अनुभाग

यह अनुभाग शैक्षणिक गतिविधियों को बनाए रखने, शैक्षिक कार्यक्रमों, कलेण्डर के निर्माण एवं विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए पाठ्य विवरण तैयार करने के लिए उत्तरदायी है । इसके अतिरिक्त छात्रवृत्ति तथा संस्थाओं को सम्बद्धता प्रदान करने के कार्यों से भी शैक्षणिक विभाग का ही सम्बन्ध होता है ।

शोध एवं प्रकाशनएकक

यह एकक शोध एवं प्रकाशन के कार्यक्रमों का कार्यान्वयन करता है तथा विद्यापीठों और संस्थान के शोध एवं प्रकाशन की गतिविधियों के साथ सहयोग स्थापित करता है । जनवरी, 1990 से श्री सुबोध चन्द्र पन्त उप-निदेशक के रूप में कार्यरत है ।

पत्राचार पाठ्यक्रम एकक

यह एकक पत्राचार पाठ्यक्रम आयोजित करने के लिए उत्तरदायी है । ये पाठ्यक्रम सम्प्रति दो स्तरों पर संचालित है :-

1. संस्कृत का प्रारंभिक पाठ्यक्रम (प्रथम वर्ष) हिन्दी और अंग्रेजी के माध्यम से
2. संस्कृत का प्रारंभिक पाठ्यक्रम (द्वितीय वर्ष) हिन्दी और अंग्रेजी के माध्यम से

परीक्षा अनुभाग

यह अनुभाग वार्षिक एवं पूरक निम्नलिखित कई स्तर की परीक्षाओं का संचालन करता है : प्रथमा, उत्तरमध्यमा, शास्त्री, शिक्षा शास्त्री, पूर्वमध्यमा, प्राक्शास्त्री आचार्य, शिक्षाचार्य । यह केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठों के छात्रों को शोध की उपाधि देता है । सत्र 1989-90 से शिक्षा शास्त्री में प्रवेश के लिए प्रवेश परीक्षा भी जारी की गई है ।

प्रशासन विभाग

यह अनुभाग सभी विद्यापीठों एवं संस्थान के सामान्य प्रशासन का संचालन करता है । संस्थान एवं विद्यापीठों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की व्यवस्था करना और सभी विद्यापीठों पर नियंत्रण आदि इस अनुभाग का प्रमुख उत्तरदायित्व है ।

वित्त एवं लेखा अनुभाग

इस अनुभाग का कार्य आय-व्यय का विवरण तैयार करना, अनुदान की प्राप्ति तथा उसका वितरण, वित्तीय व्यवस्था और वार्षिक लेखा-जोखा तैयार करना । यह भविष्य निधि की भी व्यवस्था करता है तथा शिक्षा मंत्रालय द्वारा प्रदत्त छात्रवृत्ति का वितरण करता है ।

विद्यापीठ

संस्थान के अधीनस्थ विद्यापीठों का विवरण इस प्रकार है :-

क्रमसं0	विद्यापीठ का नाम	स्थान
1.	श्री रणवीर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ	जम्मू
2.	श्री सदाशिव केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ	पुरी
3.	गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ	इलाहाबाद
4.	गुरुवायूर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ	केरल
5.	केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ	जयपुर
6.	केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ	लखनऊ
7.	श्री राजीव गांधी केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, इसी वर्ष से श्रृंगेरी (कर्नाटक) में आरंभ किया गया है ।	

उपर्युक्त विद्यापीठ निम्न निर्दिष्ट पाठ्यक्रमों के अध्यापन कार्य सम्पन्न करता है :-

क्रमसं0	पाठ्यक्रम	समकक्ष
1.	प्रथमा	मिडिल
2.	पूर्वमध्यमा	सैकण्डरी
3.	उत्तरमध्यमा/प्राकशास्त्री	सीनीयर सैकण्डरी
4.	शास्त्री	बी. ए
5.	आचार्य	एम. ए
6.	शिक्षा शास्त्री	बी. एड
7.	शिक्षाचार्य	एम. एड
8.	विद्यावारिधि	पी-एच. डी

प्रथमा से उत्तरमध्यमा तक का स्कूल स्तरे केवल पुरी और जम्मू विद्यापीठ में है । उत्तरमध्यमा के समकक्ष प्राकशास्त्री सभी विद्यापीठों से सम्बद्ध है ।

द्वितीय अध्याय

शैक्षणिक विभाग

जैसा कि प्रथम अध्याय में कहा गया है, यह अनुभाग एक उपनिदेशक की देख रेख में चलता है । प्रकृत वर्ष में इस अनुभाग में निम्नलिखित पदाधिकारी कार्यरत थे :-

एक अनिटेंट, एक यू. डी. सी, एक एल. डी. सी, एक चतर्थ वर्ग कर्मचारी इस अनुभाग के अन्दर निम्नलिखित कार्यकलाप है :-

(क) पाठ्यक्रम निर्माण

संस्थान की शैक्षिक क्रियाओं की व्यवस्था करने वाला यही अनुभाग है । विभिन्न कक्षाओं के लिए पाठ्यक्रम का निर्माण प्रमुख कार्य है । जिस पर सारे शैक्षणिक कार्य आधारित हैं ।

प्रथमा से आचार्य तक के संस्कृत विषयों के पाठ्यक्रम बनाने के लिए समितियां अलग-अलग तदर्थ रूप से बनाई जाती है । यह एक अध्ययन परिषद को सुपुर्द किया जाता है जिसका गठन भी तदर्थ रूप से ही संशोधन के लिए आवश्यकतानुसार होता है । जहां तक अंग्रेजी, हिन्दी तथा इतिहास आदि आधुनिक विषयों का प्रश्न है, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद का केन्द्रीय विद्यालय वाला पाठ्यक्रम ले लिया जाता है ।

प्रान्तीय भाषाओं के लिए राज्यशिक्षा परिषद के पाठ्यक्रम को ले लिया जाता है । शास्त्री कक्षा के लिए हिन्दी, अंग्रेजी और आधुनिक विषयों का पाठ्यक्रम वही है जो दिल्ली विश्वविद्यालय में चलता है । शास्त्री कक्षा के लिए प्रान्तीय भाषाओं के पाठ्यक्रम उन-उन राज्यों के मुख्य विश्वविद्यालयों के अनुसार होता है ।

प्रकृत वर्ष में नये अध्ययन परिषद का गठन हुआ जिसने नये पाठ्यक्रम और पाठ्य विवरण की स्वीकृति दी ।

(ख) छात्रवृत्ति

छात्रवृत्ति एकक के दो विभाग हैं । एक एकक विद्यापीठों की छात्रवृत्ति से सम्बन्ध रखता है । यह तो विद्यापीठों को दी गयी छात्रवृत्ति राशि के अनुसार चलाता है । 1991-92 में जो छात्रवृत्ति दी गयी उसकी रूपरेखा निम्नलिखित है :-

विद्यापीठ	छात्रवृत्ति पाने वालों की संख्या
केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ	-
इलाहाबाद	-
पुरी	362
जम्मू	214
गुरुवायूर	164
जयपुर	138
लखनऊ	61
शृंगेरी	-
	939

दिल्ली और तिरुपति विद्यापीठ अब विश्वविद्यालयवत कार्य करने वाला है इसलिये इनकी छात्रवृत्तियों का ब्यौरा यहां नहीं दिया है । वे अपने वार्षिक प्रतिवेदन में इसका उल्लेख करेंगे ।

छात्रवृत्ति की दूसरी शाखा मंत्रालय के द्वारा दी जाने वाली दो योजनाओं से सम्बन्ध रखती हैं :-

1. पारम्परिक छात्रों की शोध छात्रवृत्ति
2. मैट्रिक के बाद की छात्रवृत्ति

1990-91 में प्रदत्त छात्रवृत्ति की ब्यरेखा निम्नलिखित है :-

कक्षा	छात्रवृत्ति पाने वालों की संख्या	
	प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष (नवीनीकरण)
1. आचार्य	135	68
2. एम. ए	16	08
3. बी. ए	-	01
4. शास्त्री	-	07
5. विद्यावारिधि	88	63
6. पी-एच. डी	09	01

प्रवेश

अनेक संस्कृत परीक्षण संस्थाओं की परीक्षाओं की समकक्षता को ध्यान में रखते हुए संस्कृत छात्रों का प्रवेश संस्थान के अधीनस्थ विद्यापीठों में अगली कक्षा में होता है । 1990-91 में केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठों में प्रवेश की रूपरेखा निम्नलिखित है :-

विद्यापीठ	छात्र संख्या
तिरूपति	-
दिल्ली	-
इलाहाबाद	-
पुरी	568
जम्मू	196
गुरूवायूर	267
जयपुर	277
लखनऊ	97
	1405

इससे सम्बद्ध संस्थाओं के छात्रों को नहीं सम्मिलित किया गया है ।

छात्रावास की सुविधा

छात्रों की निम्नलिखित संख्या को छात्रावास की सुविधा उपलब्ध है :-

इलाहाबाद	-
पुरी	160
जम्मू	40
गुरूवायूर	-
जयपुर	59
लखनऊ	-
	259

कहा ही जा चुका है कि अब दिल्ली और तिरुपति विद्यापीठ विश्व-विद्यालयवत् कार्य करने वाले हैं इसलिये उनका उल्लेख यहां नहीं है । अपने वार्षिक प्रतिवेदन में वे इतका ब्यौरा देंगे ।

§ घ § संस्थाओं की सम्बद्धता

संस्थान का प्रारम्भ कुछ केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठों से हुआ था । बाद में कुछ स्वतंत्र संस्थाओं को सम्बद्ध कर लिया गया । इन संस्थाओं की संख्या क्रमशः बढ़ती गई है । सम्बद्ध संस्थाओं की सूची अनुबन्ध "ग" पर है ।

इन संस्थाओं को केवल प्रथमा से आचार्य तक की सम्बद्धता दी जाती है । शिक्षाशास्त्री और शिक्षाचार्य की सम्बद्धता इन्हें अब बन्द कर दी गई है । ये अब केवल केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठों तक सीमीत है । कुछ संस्थाओं को विद्यावारिधि के लिए भी सम्बद्धता प्रदान की गई है ।

§ङ§ शास्त्र चूडामणि योजना

अनुभवी और अवकाश प्राप्त विद्वानों को जो प्राचीन शास्त्र में निष्णात हैं केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठों में अध्यापकों तथा शोध छात्रों के मार्गदर्शन के लिए नियुक्त किया जाता था, लेकिन इस योजना के अन्तर्गत एक बार नियुक्त विद्वान को दुबारा नियुक्त नहीं किया जाता है । अतः नियुक्त किये जाने वाले विद्वानों की संख्या कम होती गयी है । और अब किसी विद्यापीठ में नई नियुक्ति नहीं होती है । प्रकृत वर्ष में केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठों में नियुक्त विद्वानों की संख्या शून्य थी ।

सत्र 1990-91 के अन्त होते होते शास्त्र चूड़ामणि की पूरी योजना जो मंत्रालय में भी चलती थी संस्थान के पास आ गई है इसलिये अगले वर्ष से इसका पुनर्जीवन होगा और नई नियुक्तियां भी होंगी ।

॥ तृतीय अध्याय ॥

शोध प्रबन्ध और प्रकाश एकक

शोध और प्रकाश विभाग का संचालन आजकल एक उप निदेशक के द्वारा होता है ।

प्रकृत वर्ष में इसमें निम्नलिखित अधिकारी/कर्मचारी कार्यरत थे :-

1. एक शोध सहायक, एक यू. डी. ती, एक एल. डी. ती, एक विक्रय सहायक, एक पुस्तकालय सहायक.

यह एकक केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ और संस्थान मुख्यालय के प्रकाशनों और शोध में सामंजस्य स्थापित करता है ।

प्रस्तुत वर्ष में प्रकाशन समिति की बैठक नहीं हुई । अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका "संस्कृत विमर्श" का 17वां खण्ड (भाग-1-11) का प्रकाश गत वर्ष हो गया । 18वें खण्ड के प्रकाश का कार्य चल रहा है । दिल्ली और इलाहाबाद विद्यापीठ की शोध पत्रिकायें क्रमशः शोध प्रभा और गंगानाथ झा रिसर्च जनरल का भी प्रकाशन हुआ ।

शोध समिति की बैठक नहीं हुई ।

फोर्ड फाउण्डेशन की वित्तीय सहायता से संस्थान ने दो योजनाओं को अपने हाथ में लिया है । वे हैं :- 1. हू इज हू - जिसमें परम्परागत विद्वानों की सूची तैयार की जाती है । 2. मौखिक शास्त्र परम्परा की टेपरिकार्डिंग प्रस्तुत वर्ष में संगृहीत सामग्री को तैयार कर लिया गया है । जिसे प्रकाशन के लिये साहित्य अकादमी को सौंपा जायेगा ।

काश्मीर शैव दर्शन कोश योजना

इस योजना का संचालन जम्मू विद्यापीठ में हो रहा है । प्रेस के लिए स्वच्छ पत्र तैयार कर प्रेस को दे दिया गया है और छपाई शुरू हो गयी है । अगले वर्ष तक पुस्तक प्रकाशित हो जायेगी ।

चतुर्थ अध्याय

पत्राचार पाठ्यक्रम

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान ने शैक्षिक विभाग के अन्तर्गत अलग से संस्कृत सिखाने का एक एकक स्थापित किया है गत कई वर्षों से भी अधिक समय से यह अनुभाग पत्राचार द्वारा हिन्दी और अंग्रेजी के माध्यम से प्रारंभिक स्तर पर संस्कृत भाषा सिखाने का कार्य कर रहा है । यह पाठ्यक्रम दो स्तरों का है । प्रत्येक 21 पाठों में विभक्त है और दो वर्षों में पत्राचार के माध्यम से पूरा किया जाता है ।

वर्ष 1991 में जनवरी से दिसम्बर तक दोनों पाठ्यक्रमों में छात्रों ने प्रवेश लिया था जिसका विवरण निम्नलिखित है :-

	छात्रों की संख्या
प्रथम वर्ष	
हिन्दी माध्यम	264
अंग्रेजी माध्यम	437
द्वितीय वर्ष	
हिन्दी माध्यम	85
अंग्रेजी माध्यम	203
कुल	989

चूंकि संस्थान के अंगीभूत केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ सम्पर्क बिन्दु के रूप में कार्य कर रहे है इसलिए यह निश्चय किया गया है कि संस्कृत विद्यार्थियों से ..... स्थापित करने के लिए वहीं विद्यापीठ केन्द्र होंगे, परन्तु मण्डल भर के शिक्षार्थी अध्यापकों से आमने सामने सम्पर्क कर सकेंगे और उनके समक्ष आने वाली कठिनाईयों का निवारण हो सकेगा ।

इस पाठ्यक्रम का नि:शुल्क संचालन किया जाता है, किन्तु यह निश्चय करने के लिए वस्तुत: वास्तविक शिक्षार्थी ही प्रविष्ट किये गये हैं, नाममात्र के लिए भारतीय छात्रों से पन्द्रह रूपये और विदेशी छात्रों से दस अमरीकी डालर शुल्क के रूप में लिया जाता है । इन पाठ्यक्रमों को और अधिक महत्त्व प्रदान करने के लिए तथा अधिक से अधिक शिक्षार्थियों का यह सुविधा प्रदान करने के लिए संस्थान द्वारा बहुत से महत्त्वपूर्ण कदम उठाये गये हैं । डी. ए. वी. पी, निदेशक के माध्यम से इस पाठ्यक्रम का विज्ञापन किया जाता है । दूतावासों को भी पत्र भेजा गया है । भारतवर्ष के विश्वविद्यालय के उप-कुलपतियों को भी, प्रचार-प्रसार हेतु सूचनायें प्रेषित की गई हैं । इस प्रकार के प्रयत्नों के फलस्वरूप युवा छात्रों के अतिरिक्त विभिन्न आयु वर्ग के लोगों ने भी इस पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया है और अध्ययन कर रहे हैं ।

जो शिक्षार्थी इन पाठ्यक्रमों को सफलतापूर्वक पूरा कर लेते हैं, उन्हें संस्कृत प्रवेश नामक एक प्रमाण पत्र दिया जाता है ।

अध्याय - 5

<u>परीक्षा विभाग</u>

परीक्षा विभाग के मुख्य अधिकारी उप-नियन्त्रक (परीक्षा) हैं जिनके नीचे दो और अधिकारी सहायक निदेशक तथा अनुभाग अधिकारी हैं । संस्थान की विभिन्न परीक्षाओं में छात्रों की योग्यता का परीक्षण इसके द्वारा होता है । प्रथमा से आचार्य तक की तथा शिक्षाशास्त्री और शिक्षाचार्य और विद्यावारिधि परीक्षा भी संस्थान द्वारा संचालित होती है । इन परीक्षाओं में अंगीभूत विद्यापीठ तथा सम्बद्ध संस्थाओं के छात्र सम्मिलित होते हैं । विद्यापरिषद द्वारा दिए गए मार्गदर्शन के आधार पर ही पाठ्यक्रम के अनुसार यह परीक्षायें होती हैं ।

(जिन छात्रों ने 1991-92 की परीक्षायें पास की उनका विवरण इस प्रकार है :-

क्रम सं0	कक्षा	पास
1.	प्रथमा-तृतीय	58
2.	पूर्वमध्यमा-प्रथम	216
3.	पूर्वमध्यमा-द्वितीय	88
4.	उत्तरमध्यमा-प्रथम	41
5.	उत्तरमध्यमा-द्वितीय	59
6.	प्राकशास्त्री प्रथम	318
7.	प्राकशास्त्री-द्वितीय	248
8.	शास्त्री प्रथम	589
9.	शास्त्री द्वितीय	307
10.	शास्त्री तृतीय	354
11.	आचार्य प्रथम	251
12.	आचार्य द्वितीय	301
13.	शिक्षा शास्त्री	452
	कुल	3282

शैक्षिक सत्र 1989-90 से संस्थान ने शिक्षा शास्त्री कक्षा में प्रवेश के लिए पूर्व शिक्षा शास्त्री परीक्षा का संचालन शुरू किया । 1990-91 में पूर्व शिक्षा शास्त्री परीक्षा हुई जिसके अनुसार दिल्ली में 180 तथा तिरूपति में 120 तथा अन्य विद्यापीठों में 60-60 छात्रों का प्रवेश हुआ ।

प्रशासन विभाग

यह विभाग एक उप-निदेशक के अधीन संचालित होता है । प्रकृत वर्ष में यहां निम्नलिखित अधिकारी कार्यरत थे :-

तीन असिस्टेंट, एक अनुभाग अधिकक, तीन यू. डी. सी, छः एल. डी. सी, एक आशुलिपिक ।

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के मख्यालय में प्रशासन विभाग नियमानुसार कार्यालय को व्यवस्थित ढंग से चलाने का कार्य करता है । यह केन्द्रीय विद्या-पीठों को वे सारी सुविधायें प्रदान करता है जिससे वे सुचारू रूप से चल सकें । इसका मुख्य कार्य क्षेत्र है- सामान्य प्रशासन, व्यवस्था, सेवा और आपूर्ति भूमि और मकान की प्राप्ति, केन्द्रीय विद्यापीठों की स्थापना तथा शासी परिषद् और साधारण सभा की बैठकें बुलाना ।

जिन विद्यापीठों के पास अपना भवन नहीं है उनके निर्माण के लिए जमीन प्राप्त करने का यत्न किया जा रहा है । इस सम्बन्ध में श्री रणवीर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, जम्मू के भवन निर्माण के लिए फिलहाल में कुछ जमीन खरीदी गई है । जमीन पर दिवाल खड़ा कर दिया गया है । जयपुर और लखनऊ में खरीदी गयी जमीन पर भी ऐसी ही व्यवस्था की गयी है । पुरी विद्यापीठ की जमीन के लिये उड़ीसा सरकार तत्परता से काम कर रही है । कर्णाटक सरकार से भी श्रृंगेरी विद्यापीठ के लिये मुफ्त जमीन देने के लिए प्रार्थना की गयी है ।

अध्याय - 7

वित्त और लेखा विभाग

इस विभाग का संचालन उप-निदेशक (वित्त) करते हैं और इनके अधीन एक अनुभाग अधिकारी, एक सहायक, एक यू. डी. सी और चार एल. डी. सी हैं ।

बजट

1990-91 से बचे हुए 77.17 लाख रुपये को अगले सत्र में समाविष्ट किया गया । मंत्रालय ने सब मिलाकर 445.79 लाख रुपये जिसमें पिछले साल की बची हुई रकम भी सम्मिलित है की स्वीकृति दी । यह रकम निम्नप्रकार से विनियोजित की गई :-

एकक	प्लान	नान प्लान (रु० लाखों में)	कुल
मुख्यालय	114.89	98.80	213.69
पुरी	1.00	42.00	43.00
इलाहाबाद	3.00	29.70	32.70
जम्मू	1.00	38.50	39.50
गुरुधायूर		35.50	35.50
जयपुर	2.40	26.50	28.90
लखनऊ	25.00	24.00	49.00
श्रृंगेरी	3.50	-	3.50
कुल	156.79	295.00	445.79

इस रकम का भुगतान वेतन और अन्य भत्ते स्कालरशिप तथा अन्य व्यय मदों में हुआ 104.08 लाख की बची हुई । रकम अगले वर्ष के कुछ महीनों के लिए रख ली गई ।

लेखा-- जहां तक लेखे की तैयारी और प्रस्तुत करने का प्रश्न है, संस्थान पीछे पड़ा हुआ है । फिर भी इस विभाग के प्रयत्नों से 86-87 तक के लेखे की प्रस्तुति समाप्त कर दी गई है । अंगीभूत विद्यापीठों को लेखा परीक्षण और उसका सर्टिफिकेशन उन्हें महालेखाकारों के द्वारा इसी साल हो चुका है । 1991-92 की लेखा परीक्षा 1992 के अक्टूबर-नवम्बर में हो चुका है । प्राप्ति और भुगतान का ब्यौरा अनुबन्ध 4 पर है ।

मैंटेनेंस

इस विभाग में वेतन और प्रोविडेंट फण्ड का ब्यौरा मुख्यालय के अधिकारियों और स्टाफ मेम्बर्स के लिये रखा जाता है । वित्तीय वर्ष समाप्त होते ही प्रत्येक व्यक्ति को उनके वार्षिक भविष्य निधि का ब्यौरा बता दिया जाता है ।

ऑडिट आब्जैक्शन

आडिट आब्जैक्शन के निर्णय के लिये प्रयत्न जारी रहा । इस सम्बन्ध में प्रत्येक विद्यापीठ को कहा गया कि समय पर आडिट आब्जैक्शन का जवाब न आने से अभी तक बहुत से आब्जैक्शन अनिर्णीत अवस्था में ही पड़े हुए हैं ।

आंतरिक परीक्षण

इंटरनल ओडिट के लिए जिस स्टाफ की जरूरत है उसकी स्वीकृति अभी प्राप्त हुई है । स्थान अभी भी रिक्त हैं, फिर भी संस्थान आंतरिक परीक्षण के लिए अपने ही तरफ से व्यवस्था करता रहा है और विद्यापीठ तथा मुख्यालय के प्रभाग अधिकारियों के द्वारा कार्य सम्पन्न करता रहा है ।

श्री सदाशिव केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, पुरी (उड़ीसा)

सदाशिव केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, पुरी पहले उडीसा राज्य सरकार के अधीन पारम्परिक ढंग से संस्कृताध्ययन करा रहा था । 15 अगस्त 1971 को यह राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के द्वारा अधिगृहीत हुआ जो मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन स्वायत्त संस्था है । यह जनता में संस्कृत के प्रचार प्रसार के लिये स्थापित हुआ था । पुराने सदाशिव संस्कृत कालेज का नया नामकरण हुआ - श्री सदाशिव केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ ।
प्रवेश का विवरण इस प्रकार है :-

कक्षा	प्रविष्ट छात्र सं0	छात्रवृत्ति पाने वाले छात्र
प्रथमा-प्रथम वर्ष	6	6
प्रथमा द्वितीय वर्ष	7	7
प्रथमा तृतीय वर्ष	8	6
	21	19
पूर्व मध्यमा-प्रथम वर्ष	13	11
पूर्व मध्यमा-द्वितीय वर्ष	11	6
	24	17

उत्तरमध्यमा प्रथम वर्ष	10	7
" द्वितीय वर्ष	15	9
	25	16
प्रकाशास्त्री प्रथम वर्ष	58	26
" द्वितीय वर्ष	44	28
	106	54
शास्त्री प्रथम वर्ष	76	48
" द्वितीय वर्ष	62	21
" तृतीय वर्ष	60	50
	190	119
आचार्य प्रथम वर्ष	70	52
" द्वितीय वर्ष	70	57
	140	109
शिक्षा शास्त्री	48	28
कुल	568	362

विद्यावारिधि में 20 छात्रों का पंजीयन हुआ । 160 छात्रों को छात्रावास की सुविधा दी गई ।

प्रविष्ट छात्रों में से पांच अनुसूचित जाति के हैं ।

परीक्षा में पास होने वाले छात्रों का प्रतिशत

प्रथमा तृतीय वर्ष	25 प्रतिशत
पूर्व मध्यमा प्रथम वर्ष	56 प्रतिशत
" द्वितीय वर्ष	13 प्रतिशत
उत्तरमध्यमा प्रथम वर्ष	16 प्रतिशत
" द्वितीय वर्ष	65 प्रतिशत

प्राकशास्त्री प्रथम वर्ष	58 प्रतिशत
" द्वितीय वर्ष	77 प्रतिशत
शास्त्री प्रथम वर्ष	38 प्रतिशत
शास्त्री द्वितीय वर्ष	83 प्रतिशत
शास्त्री तृतीय वर्ष	88 प्रतिशत
आचार्य प्रथम वर्ष	59 प्रतिशत
आचार्य द्वितीय वर्ष	83 प्रतिशत
शिक्षा शास्त्री	98 प्रतिशत

तीन अध्यापकों की नियुक्ति हुई तथा दो अध्यापकों का स्थानांतरण
छात्रों ने खेलकूद तथा राष्ट्रिय सेवा योजना में भाग लिया ।
विस्तार भाषण के लिए 14 विशिष्ट विद्वानों को आमंत्रित किया गया ।
कुछ अध्यापकों ने रिफ्रेशर कोर्स में भाग लिया । दीक्षान्त समारोह तथा वार्षिक दिवस का भी आयोजन हुआ ।

श्री रणवीर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, जम्मू.

इतिहास

जम्मू काश्मीर नरेश महाराजाधिराज श्री रणवीर सिंह द्वारा संस्थापित श्री रघुनाथ संस्कृत महाविद्यालय का अधिग्रहण भारत सरकार द्वारा । अप्रेल, 1971 ई० को किया गया था । जिसका नाम श्री रणवीर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ रखा गया ।

इसमें प्रथमा से लेकर आचार्य तक छात्र छात्राओं अध्ययन करते हैं । इसमें साहित्य, नव्यव्याकरण, फलितज्योतिष तथा सर्वदर्शन में स्नातक तथा स्नातकोत्तर कक्षायें चलती हैं । सन् 1979 से शिक्षा शास्त्री (बी. एड) की कक्षायें भी चल रही है जिसमें संस्कृत के शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाता है । शास्त्री स्तर तक पारम्परिक संस्कृत शास्त्रीय विषयों के साथ आधुनिक विषयों हिन्दी, डोगरी, अंग्रेजी, राजनीति/इतिहास आदि के अध्यापन की व्यवस्था है ।

विद्यापीठ में काश्मीर शैवदर्शन कोश प्रोजेक्ट है जो कि काश्मीर शैव दर्शन के काश का निर्माण कर रहा है । प्रेस कापी तैयार हो चुकी है और छपाई शुरू होने को है ।

विद्यापीठ । अप्रेल, 1971 से ही 8 किराये के भवनों में चल रहा है । जम्मू काश्मीर सरकार ने भौनवाल में विद्यापीठ के भवन के लिए जगह दी है ।

इस वर्ष छात्रों को प्रवेश इस प्रकार हुआ :-

प्रथमा					15+3+3=21
पूर्वमध्यमा					19+18= 37
उत्तरमध्यमा					12+6=18
प्राक्शास्त्री					19+9=28
शास्त्री					20+13+33=66
आचार्य	ज्योतिष	साहित्य	व्याकरण	सर्वदर्शन	
प्रथम वर्ष	9	3	1	1	= 14
द्वितीय वर्ष	8	4	5	5	=22
शिक्षा शास्त्री	70				

कुल : 196

इसमें आठ अनुसूचित जाति के भी हैं ।
पांच छात्रों का पंजीयन विद्यावारिधि के लिए हुआ ।

छात्रावास

जम्मू काश्मीर के अतिरिक्त प्रदेश जैसे हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा राजस्थान, बिहार, मध्यप्रदेश, भोपाल आदि से छात्र यहां आकर प्रवेश लेते हैं । विद्यापीठ के पास अपना भवन नहीं है इसलिए अध्यापन कार्य तथा पुस्तकालय आदि किराये के मकान में होते है । उसी तरह छात्रावास भी किराये मकान में चह रहे हैं । छात्रों को आवास मुफ्त मिलता है । तीन छात्रावासों में 40 छात्र रहते हैं ।

छात्रवृत्ति

प्रथमा से आचार्य तक के छात्रों को छात्रवृत्ति दी जाती है । छात्रवृत्ति का विवरण नीचे प्रस्तु है :-

प्रथमा	21
पूर्व मध्यमा	27
उत्तरमध्यमा	18
प्राक्शास्त्री	28
शास्त्री	64
आचार्य	36
शिक्षाशास्त्री	20
कुल	214

डा० गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ (इलाहाबाद)

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के अन्दर एक शोध संस्था है । इस विद्यापीठ मे प्रतिवर्ष कुछ शोध छात्र पंजीयन होते हैं और विद्यावारिधि उपाधि प्राप्त करने के लिए शोध कार्य करते हैं । ये छात्र इस विद्यापीठ में विद्वानों के अधीन शोध कार्य करते हैं और विद्यापीठ के पुस्तकालय तथा पाण्डुलिपि विभाग का उपयोग करते हैं । हमारे पुस्तकालय और पाण्डुलिपि विभाग का उपयोग केवल छात्र और अध्यापक ही नहीं करते बल्कि नगर के और संभ्रान्त पुरुष भी जिन्हें संस्कृत में रुचि है आकर इसका उपयोग करते हैं ।

विद्यापीठ में अभी 5 रीडर, 4 प्रवक्ता और 5 शोध सहायक कार्यरत हैं । यह शोध कार्य तो करते ही हैं उनको कुछ और कार्य भी सुपुर्द किये जाते हैं । विद्यापीठ की शोध योजनायें केवल एक विद्वान नहीं बल्कि मिलजुल कर सब करते हैं । इस विद्यापीठ के मुख्य कार्यकलाप हैं - दुर्लभ ग्रन्थों का प्रकाशन । इसके लिए हमारे पुस्तकालय में प्राप्त पाण्डुलिपियों का उपयोग होता है । पाण्डुलिपियां अन्य स्थानों से भी प्राप्त की जाती हैं । संस्कृत भाषा और साहित्य धर्म तथा दर्शन के क्षेत्र में भी यहां पर अध्ययन होता है । 1979 में यहां एक भाषा विज्ञान एकक भी कार्य कर रहा है जो संस्कृत शिक्षण को सुलभ एवं सुगम बनाने की ओर क्रियाशील है ।

इस विद्यापीठ के अधीन एक स्वतंत्र प्रकाशन और विक्रय विभाग है । शोध योजना के अन्दर जो पुस्तकें प्रकाशित होती हैं उनका विक्रय भी यहीं होता है । विद्यापीठ से नियमित रूप से एक त्रैमासिक शोध पत्रिका भी प्रकाशित होती है । इसका आरंभ 1943 से हुआ था जो अब तक लगातार चल रहा है । इस शोध पत्रिका का विश्व में सम्मान हो रहा है ।

इस विद्यापीठ में शिक्षण का कार्य नहीं होता । फिर भी कई वर्षों से यहां छात्र तथा शिक्षक आकर अनेक विषयों पर गहन अध्ययन करते हैं । शास्त्र चूड़ामणि योजना के अन्तर्गत भी अभी डा० चन्द्रभानु त्रिपाठी कार्यरत हैं ।

पाण्डुलिपि कक्ष

विद्यापीठ के पाण्डुलिपि विभागमें 44 हजार 200 पुस्तकें हैं । 1987-88 में 1210 पाण्डुलिपियां प्राप्त की गई थी । इन पुस्तकों के द्वारा संस्कृत का कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं रहा है । प्रारंभ में इस पुस्तकालय में केवल वहीं पुस्तकें थीं जो श्री गंगानाथ झा के पास थीं । 1971 में अधिग्रहण के समय 13 हजार पाण्डुलिपियां थी । यह संख्या आज 44 हजार 200 तक पहुँच गई है । इस तीस हजार पाण्डुलिपियों में अधिकांश पिछले ही कई वर्षों में खरीदी गई हैं । यद्यपि सभी विभाग की पुस्तकें यहाँ पर हैं फिर भी तंत्र न्याय धर्मशास्त्र और साहित्य ग्रन्थों की प्रचूरता है । इन पाण्डुलिपियों का सम्पादन विद्यापीठ के शोध अधिकारी तथा विद्यार्थियों के द्वारा किया जाता है । कुछ का प्रकाशन भी हो चुका है ।

शोध योजनायें

इस विद्यापीठ का मुख्य कार्यकलाप अप्रकाशित संस्कृत ग्रन्थों का प्रकाशन करना है ।

प्रकाशन

इस वर्ष चार ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ ।

सत्र 1991-92 में 11 छात्रों को विद्यापीठ में पंजीयन हुआ है और संस्थान द्वारा निर्णित विषयों पर यह शोध कार्य कर रहे हैं ।

विद्यापीठ में विस्तार भाषण का भी आयोजन हुआ ।

गुरुवायूर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ (केरल)

प्रवेश

गुरुवायूर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ का पुराना नाम साहित्य दीपिका संस्कृत विद्यापीठ था । अधिग्रहण के बाद यह नाम बदल दिया गया । यह सात विद्यापीठों में से एक है । विद्यापीठ ग्रीष्मावकाश के पश्चात् 13 जुलाई 1987 को खुला । इसके साथ ही प्रवेश आदि कार्यक्रम शुरू हो गया । इस वर्ष विद्यापीठ का प्रवेश विवरण निम्न प्रकार है :--

कक्षाएं	छात्र संख्या
प्राक्-शास्त्री प्रथम वर्ष	46
प्राक्-शास्त्री द्वितीय वर्ष	33
शास्त्री प्रथम वर्ष	36
शास्त्री द्वितीय वर्ष	29
शास्त्री तृतीय वर्ष	17
आचार्य प्रथम वर्ष	23
आचार्य द्वितीय वर्ष	21
शिक्षा-शास्त्री	62
	कुल 267

छात्रवृत्ति

छात्रवृत्ति का विवरण निम्न प्रकार से है :--

प्राक्-शास्त्री प्रथम वर्ष	29
प्राक्-शास्त्री द्वितीय वर्ष	12
शास्त्री प्रथम वर्ष	29
शास्त्री द्वितीय वर्ष	18
शास्त्री तृतीय वर्ष	10
आचार्य प्रथम वर्ष	18
आचार्य द्वितीय वर्ष	17
शिक्षा-शास्त्री	31
	कुल 164

परीक्षा परिणाम

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान की 1989 वाली वार्षिक परीक्षा में उत्तीर्ण छात्रों का विवरण इस प्रकार है :--

प्राक्-शास्त्री प्रथम वर्ष	65. 3 प्रतिशत
प्राक्-शास्त्री द्वितीय वर्ष	88. 37 प्रतिशत

शास्त्री प्रथम वर्ष	75.76 प्रतिशत
शास्त्री द्वितीय वर्ष	94.44 प्रतिशत
शास्त्री तृतीय वर्ष	93.3 प्रतिशत
आचार्य प्रथम वर्ष	शतप्रतिशत
आचार्य द्वितीय वर्ष	93.33 प्रतिशत
शिक्षा-शास्त्री	89.80 प्रतिशत

6 छात्रों का विद्यावारिधि के लिये पंजीयन हुआ । किसी छात्र को छात्रावास की सुविधा नहीं मिली । 6 अनु/जनजाति के छात्रों का प्रवेश हुआ ।

केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, जयपुर

इस विद्यापीठ की स्थापना मई 1983 में हुई थी । तत्कालीन राजस्थान मुख्यमंत्री श्री शिवचरण माथुर के तत्कालीन शिक्षा मंत्री भारत सरकार के विनय पर राजस्थान संस्कृत अकादमी की अनुशंसा से ऐसा हुआ था ।

शिक्षण सत्र 1989-90 की वार्षिक गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार से है :-

विविध कक्षाओं में प्रवेश

क्रम संख्या	कक्षा	प्रवेश
1-	आचार्य प्रथम वर्ष	45
2-	आचार्य द्वितीय वर्ष	9
3-	शिक्षा-शास्त्री	72
4-	शास्त्री प्रथम वर्ष	65
5-	शास्त्री द्वितीय वर्ष	29
6-	शास्त्री तृतीय वर्ष	22
7-	प्राक्-शास्त्री प्रथम वर्ष	19
8-	प्राक्-शास्त्री द्वितीय वर्ष	16
		277

विविध कक्षाओं में दी गई छात्रवृत्ति का विवरण:-

1-	आचार्य प्रथम वर्ष	7
2-	आचार्य द्वितीय वर्ष	5
3-	शिक्षा-शास्त्री	30
4-	शास्त्री प्रथम वर्ष	46
5-	शास्त्री द्वितीय वर्ष	16
6-	शास्त्री तृतीय वर्ष	15
7-	प्राक्शास्त्री प्रथम वर्ष	11
8-	प्राक-शास्त्री द्वितीय वर्ष	8
		138

7 अनुसूचित जनजाति तथा दो अनुसूचित जाति के छात्र भी पढ़ रहे हैं । विद्यादारिधि के लिए पांच छात्रों का पंजीयन हुआ । 4 अनुसूचित जाति तथा 7 अनुसूचित जनजाति को प्रवेश दिया गया ।

शास्त्रीय व्याख्यान

सत्र 1990-91 के दौरान तीन विद्वानों के व्याख्यान सम्पन्न हुए । 59 छात्रों की छात्रावास की सुविधा दी गयी । 24.8.90 को संस्कृत दिवस का आयोजन हुआ ।

प्रकाशन

1- वाद पंचक प्रकाशन (भाग-2)
2- तन्त्र, प्रदीप

एक अध्यापक स्थानान्तरण द्वारा जयपुर आये तथा चार अध्यापक यहाँ से गये ।

केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ लखनऊ

छात्रवृत्ति पाने वाले छात्रों का विवरण इस प्रकार है :--

प्राक्-शास्त्री प्रथम वर्ष	-
प्राक्-शास्त्री द्वितीय वर्ष	-
शास्त्री प्रथम वर्ष	7
शास्त्री द्वितीय वर्ष	-
शास्त्री तृतीय वर्ष	6
आचार्य प्रथम वर्ष (साहित्य)	8
आचार्य द्वितीय वर्ष	10
शिक्षा-शास्त्री	30
	61

छात्रावास की सुविधा किसी छात्र को नहीं दी गयी ।

इस सत्र में अनुसूचित जाति के सात छात्रों ने प्रवेश लिया ।

1989 की वार्षिक परीक्षा का परिणाम इस प्रकार है :-

प्राक्-शास्त्री प्रथम वर्ष	1
प्राक्शास्त्री द्वितीय वर्ष	1
शास्त्री तृतीय वर्ष	2
शिक्षा-शास्त्री	54
आचार्य प्रथम वर्ष	8
आचार्य द्वितीय वर्ष	7

विद्यावारिधि के लिये 15 छात्रों का पंजीयन हुआ ।

अध्यापकों की कमी के कारण अंशकालिक अध्यापकों से काम लिया गया ।

इसके अलावा विद्यापीठ कोलकूद आदि के विभिन्न कार्यक्रम हुए ।

× × × ××× × ××

अनुबन्ध "क"

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
ए-40, विशाल एनक्लेव,
राजा गार्डन, नई दिल्ली-27.

दिनांक 8.10.91 को गठित संस्थान की साधारण सभा एवं शासी परिषद् ।

साधारण सभा

1-	श्री अर्जुन सिंह मानव संसाधन विकास मंत्रालय	अध्यक्ष
2-	श्री के0एन0 राव 21/बी, टेलीग्राफ लेन, नई दिल्ली-110001	उपाध्यक्ष
3-	वित्तीय सलाहकार मानव संसाधान विकास मंत्रालय (शिक्षा-विभाग)	सदस्य
4-	श्री एम0आर0 कोलहाटकर सलाहकार (शिक्षा) योजना आयोग, योजना भवन नई दिल्ली	सदस्य
5-	श्री प्रियदर्शी ठाकुर संयुक्त सचिव (भाषा) शिक्षा-विभाग मानव संसाधन विकास मंत्रालय	सदस्य
6-	श्री विद्यानिवास मिश्र उप-कुलपति, संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी (यू0पी0)	सदस्य
7-	प्रो0 मुनिश्वर झा उप-कुलपति, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा (बिहार)	सदस्य

8- प्रो० वि० वेंकटाचलम्
निदेशक, भोगीलाला लहर चंद
इंस्टीट्यूट ऑफ इंडोलाजी
20 के०एम०जि०टी० करनाल रोड
दिल्ली-36

9- प्रो० आर०सी० द्विवेदी — सदस्य
प्रोफेसर-संस्कृत,
राजस्थान विश्वविद्यालय
जयपुर (राज०)

10- श्री एस० धर्माधिकारी — सदस्य
वैदिक संशोधन मण्डल,
पूना (महाराष्ट्र)

11- डा० एस० विद्यालंकार — सदस्य
उप-कुलपति,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार (यू०पी०)

12- पं० एम०ए० लक्ष्मीनाताचार्य — सदस्य
रजिस्ट्रार
एकेडमी ऑफ संस्कृत रिसर्च,
मैलकोट-571431
कर्नाटक

13- श्री एस० रिनपोच,
निदेशक, — सदस्य
सैन्ट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ एच०आर०
तिब्बतन स्टडीज सारनाथ,
वाराणसी-221007 (यू०पी०)

14- प्रो०कृष्णेश शुक्ल
संस्कृत विभाग एवं प्राकृतभाषा — सदस्य
गोरखपुर विश्वविद्यालय
गोरखपुर-273009 (यू०पी०)

15- प्रो० आर०वी० जोशी
दिल्ली-110007 — सदस्य

सदस्य

16- डा0 आर0 वी0 त्रिपाठी
डिपार्टमेंट ऑफ संस्कृत विश्वविद्यालय,
सागर-470003 (म0प्र0) सदस्य

17- निदेशक,
विश्वेश्वरानंद विश्व/ बन्धु वैदिक
रिसर्च इंस्टीट्यूट,
होशियारपुर (पंजाब) सदस्य

18- निदेशक
वैदिक संशोधन मण्डल
पूना (महाराष्ट्र) सदस्य

19- सचिव
एम0पी0 संस्कृत एकेडमी.
भोपाल (म0प्र0) सदस्य

20- डा0 जी0सी0त्रिपाठी
गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ
चन्द्रशेखर आजाद पार्क, इलाहाबाद सदस्य

21- डा0 के0 एन0 पाठक
श्री रणवीर केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ,
304, ए-शास्त्री नगर, जम्मू सदस्य

22- डा0 आर0के0 शुक्ल
केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ,
वी-89, ललित निवास बापू नगर,
गणेश मार्ग, जयपुर (राज0) सदस्य

23- निदेशक
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
नई दिल्ली-27 सदस्य

अनुबन्ध "ख"

शासी परिषद्

1-	श्री अर्जुन सिंह मानव संसाधन विकास मंत्रालय	
2-	श्री0के0एन0 राव 21/वी, टेलीग्राफ लेन, नई दिल्ली-1	अध्यक्ष
3-	वित्तीय सलाहकार मानव संसाधन विकास मंत्रालय	उपाध्यक्ष
4-	श्री प्रियदर्शी ठाकुर संयुक्त सचिव (भाषा) मानव संसाधन विकास मंत्रलाय	सदस्य
5-	प्रो0 विद्यानिवास मिश्र उप-कुलपति, संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी (यू0पी0)	सदस्य
6-	पं0 एम0ए0 लक्ष्मीताताचार्य कुल सचिव, एकेडमी ऑफ संस्कृत रिसर्च, मैलकोट-571431 (कर्नाटक)	सदस्य
7-	प्रो0 आर0सी0 द्विवेदी प्रो0 संस्कृत, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)	सदस्य
8-	प्रो0 कमलेश शुक्ल संस्कृत विभाग एवं प्राकृत भाषा गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर-273009 (यू0पी0)	सदस्य
9-	निदेशक राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान नयी दिल्ली-27	सदस्य

सदस्य- सचिव

अनुबन्ध "ग"

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
ए-40, विशाल एनक्लेव,
राजा गार्डन, नई दिल्ली-27.

(सम्बद्धता प्राप्त संस्थायें -1990-91)

क्रम सं0	संस्था का नाम	कक्षा के लिए सम्बद्धता
1-	जगदीश नारायण ब्रह्मचार्याश्रम संस्कृत विद्यालय, लगमा, मु0, पो0-लगमा (रामभद्रपुर) जिला दरभंगा (बिहार) (लोहना रोड)	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय
2-	राजकुमारी गणेश शर्मा संस्कृत विद्यापीठ, कोलहंटापटोरी जिला- दरभंगा (बिहार)	प्रथमा- प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्-शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री- प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य-प्रथम, द्वितीय, (साहित्य)
3-	डा0 रामजी महथा संस्कृत महाविद्यालय मालीघाट, मुजफ्फरपुर (बिहार)	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा- प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री- प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा- प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य-प्रथम (साहित्य), न0 व्या0 (सिद्धांत ज्यो0, फलित ज्योतिष)
4-	भगवान महावीर संस्कृत विद्यापीठ बी-3/95, जनकपुरी, नई दिल्ली	उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री- प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय
5-	श्री हनुमान संस्कृत महाविद्यालय एफ 4 87/3, रघुवीर नगर, नई दिल्ली	प्रथमा- प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय
6-	वसंतग्राम आदर्श संस्कृत विद्यापीठ वसंत नगर, वसंत विहार नई दिल्ली-57	प्रथमा- प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा- प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा- प्रथम, द्वितीय

7-	प्राचार्य, ब्रह्मर्षि रामप्रपन्नाचार्य राजघाट पावर हाउस गांधी समाधि, नई दिल्ली	पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय
8-	वेद संस्थान सी-22, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली	विद्यावारिधि
9-	हरियाणा संस्कृत विद्यापीठ, बधौला, तह-पल्लवल, जिला-फरीदाबाद (हरियाणा)	आचार्य-प्रथम, द्वितीय
10-	रामकृष्ण आदर्श संस्कृत विद्यापीठम्, पो0अरूणापुरम पल्लई (केरल)	प्राकशास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय
11-	परमभट्टार गुरूकुलम विद्यापीठम् संस्कृत कालेज, श्रीरामानन्द नगर, वैद्यमपाढी, पो-682308 अरणाकुलम, जिला-केरल	प्राकशास्त्री-प्रथम, द्वितीय
12-	कालडी प्लाटिनम जुबली संस्कृत कालेज फार हायर स्टडीज जिला-कालडी, एरणाकुलम (केरल)	पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राकशास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम (व्याकरण)
13-	मणिपुर संस्कृत विद्यापीठम डी.एम.कालेज कैम्पस इम्फाल, मणिपुर	प्राकशास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय
14-	नवजागृति संस्कृत विद्यापीठ गंगापुर सिटी-322201 जिला-सवाईमाधोपुर (राज0)	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय
15-	कुप्पूस्वामी शास्त्री रिसर्च इंस्टीट्यूट मैलपुर, 84, रायनपेटाह हाई रोड़ मद्रास-600004 (तमिलनाडु)	विद्यावारिधि

16-	श्री विद्या एजूकेशनल सोसायटी 44ए, पार्थसारथी स्ट्रीट, एस·एस·कालोनी, मदुरई-16	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय
17-	आदर्श संस्कृत विद्या परिषद् सल्ड महादेव, जिला-पौढ़ी गढ़वाल	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय
18-	श्री बटुकनाथ संस्कृत महाविद्यालय बी-21/127, बटुक भैरो मंदिर कमच्छा, वाराणसी (यू·पी·)	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य-प्रथम, द्वितीय, (साहित्य, नव्यव्याकरण)
19-	श्री बिल्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय बिल्वेश्वर कुमार, पो-सिलधार कुमार जिला-टेहरी गढ़वाल (यू·पी·)	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय
20-	पगलानंद संस्कृत महाविद्यालय दारूआ, पो-कोन्टई, जिला-मिदनापुर (वै·बं·)	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय
21-	श्री भोलानंद संस्कृत महाविद्यालय द्वारा एच·एन·शर्मा 57, चप्परमहल, सदर बाजार नार्थ 24 परगना-743101 (वै·बं·)	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय
22-	ठाकुर गदाधर विद्यापीठ पो·आ·आराम बाग, कालीपुर जिला-हुगली (वै·बं·)	प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय प्रथमा-प्रथम, द्वितीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय
23-	जगदगुरू शंकराचार्य संस्कृत विद्यापीठ महर्षि धर्मशाला जोधामल रोड, हरिद्वार (यू·पी·)	प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय
24-	वैल्लोर एजूकेशन ट्रस्ट 37, सैकेण्ड ईस्ट क्रास गांधी नगर, वैल्लोर	प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय

25-	श्री अम्बाजी संस्कृत महाविद्यालय मलाद ईस्ट, बम्बई	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय
26-	श्री बबदेश्वर संस्कृत महाविद्यालय पोरबन्दर (गुजरात)	प्रथमा-प्रथम पूर्वमध्यमा-प्रथम उत्तरमध्यमा-प्रथम प्राकशास्त्री-प्रथम
27-	एकेडमी आफ रिसर्च इंस्टीट्यूट मालकोट	आचार्य-प्रथम (वेदांत, व्या॰) विद्यावारिधि
28-	इन्द्रप्रस्थ संस्कृत विद्यालय बुद्धविहार, दिल्ली	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम
29-	श्री महर्षि कण्व संस्कृत विद्यालय कोटद्वार, गढ़वाल (यू॰पी॰)	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय पूर्वमध्यमा-प्रथम उत्तरमध्यमा-प्रथम
30-	श्री सीतारामदास ओंकारनाथ संस्कृत शिक्षा संसद, कलकत्ता	विद्यावारिधि (पीएच॰डी॰)
31-	श्री सो॰एस॰ गुरूकुल संस्कृत महाविद्यालय वैल्लूपुरम (तमिलनाडु)	प्रथमा-प्रथम पूर्वमध्यमा-प्रथम
32-	वूमैन चैरिटेबल सोसायटी उल्लूर, त्रिवेन्द्रम-695011	प्राकशास्त्री-प्रथम शास्त्री-प्रथम आचार्य-प्रथम
33-	श्री टिबरीनाथ सामवेद संस्कृत महाविद्यालय, नैनीताल रोड बरेली (यू॰पी॰)	प्रथमा-प्रथम पूर्वमध्यमा-प्रथम उत्तरमध्यमा-प्रथम
34-	इन्टरनेशनल इंस्टीट्यूट आफ आयुर्वेदिक साईंसिस, बी-5/71, कृष्णा नगर दिल्ली	प्रथमा-प्रथम उत्तरमध्यमा-प्रथम पूर्वमध्यमा-प्रथम
35-	श्री हनुमान मंदिर संस्कृत पाठशाला शक्तिनगर, दिल्ली-6	प्रथमा-प्रथम पूर्वमध्यमा-प्रथम

36-	श्री महावीर विश्व विद्यापीठ पश्चिम विहार, दिल्ली	प्रथमा-प्रथम पूर्वमध्यमा-प्रथम उत्तरमध्यमा-प्रथम प्राकशास्त्री-प्रथम शास्त्री-प्रथम आचार्य-प्रथम
37-	श्रीमोतीनाथ संस्कृत महाविद्यालय रमेश नगर, नई दिल्ली	प्रथमा-प्रथम पूर्वमध्यमा-प्रथम उत्तरमध्यमा-प्रथम शास्त्री-प्रथम आचार्य-प्रथम (व्या०, साहि॰ न्याय)
38-	आलोक संस्कृत महाविद्यालय मोहिन्दर गढ़ (हरियाणा)	प्रथमा-प्रथम पूर्वमध्यमा-प्रथम प्राकशास्त्री-प्रथम, द्वितीय
39-	भारतीय संस्कृत प्रचार सभा पय्यान्नूर	प्राकशास्त्री-प्रथम, द्वितीय
40-	बाल विद्या मंदिर रोहिणी पूठकलां दिल्ली-41	प्रथमा-प्रथम पूर्वमध्यमा-प्रथम प्राकशास्त्री-प्रथम
41-	श्री राम ज्योतिष कर्मकाण्ड महाविद्यालय मण्डावली, दिल्ली-92	आचार्य-प्रथम (कर्मकाण्ड, पौरोहित्य ज्योतिष, फलित तथा सिद्धांत)
42-	विवेकानन्द संस्कृत पाठशाला विवेकानन्द आश्रम, विवेकानन्द नगर पो-हिबारा (वी॰ यू॰) तह-मेहकर जिला-बुलढाना, महाराष्ट्र-443301	प्रथमा-प्रथम पूर्वमध्यमा-प्रथम उत्तरमध्यमा-प्रथम
43-	श्री रघुवर रामानंद वेदांत महाविद्यालय श्री कौशलेन्द्र मठ, पो0पालडीसरखेज रोड अहमदाबाद (गुजरात) 380007	प्रथमा-प्रथम पूर्वमध्यमा-प्रथम उत्तरमध्यमा-प्रथम शास्त्री-प्रथम आचार्य-प्रथम
44-	हरेश्वर संस्कृत महाविद्यालय लिंगसे, दार्जिलिंग हुलाक-लिंगसे, वाया-रिन्होक पूर्व सिक्किम-737133	प्रथमा-प्रथम पूर्वमध्यमा-प्रथम उत्तरमध्यमा-प्रथम प्राकशास्त्री-प्रथम शास्त्री-प्रथम

45- गिन्नी देवी संस्कृत विद्यापीठ
मोदी नगर (यू.पी.)
प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय
पूर्वमध्यमा-प्रथम
उत्तरमध्यमा-प्रथम

सम्बद्धता प्राप्त संस्थायें-1990-91

क्र.सं.	स्थायी सम्बद्धता	कक्षा के लिए सम्बद्धता
1-	लक्ष्मीदेवी शर्राफ आदर्श संस्कृत महाविद्यालय काली रेखा, वैद्यनाथ धाम देवधर, बिहार	प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य-प्रथम, द्वितीय (साहित्य, नव्यव्या. ज्योतिष)
2-	आर्य कन्या गुरूकुल न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय
3-	श्री समन्तभद्र संस्कृत महाविद्यालय दरियागंज, नई दिल्ली	प्रथमा-प्रथम, द्वितीय तृतीय पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय आचार्य-प्रथम, द्वितीय (साहित्य, जैनदर्शन, व्याकरण) शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय
4-	कालीकट आदर्श संस्कृत विद्यापीठ पो-बालूसरी, जिला-कालीकट (केरल)	प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य-प्रथम, द्वितीय (साहित्य, अद्वैतवेदांत)
5-	कोडुंगलूर विद्यापीठम् प्लेस रोड, पो-कोडुंगलूर जिला-त्रिचूर (केरल)	प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य-प्रथम, द्वितीय (साहित्य)
6-	श्री शंकरा संस्कृत विद्यापीठम् पो-इड्डाक्कडम वाया-एज्यूकोन, क्वीलोन जिला-केरल	पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय प्राक्शास्त्री-प्रथम, द्वितीय शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय आचार्य-प्रथम, द्वितीय (साहित्य, व्याक अद्वैतवेदांत)

7- मुम्बादेवी आदर्श संस्कृत महाविद्यालय
भारतीय विद्या भवन
के.एम.मुन्शी मार्ग
बम्बई

प्राकशास्त्री-प्रथम, द्वितीय
शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय
आचार्य-प्रथम, द्वितीय
अद्वैत- (वेदांत, साहित्य, नव्यन्याय, ज्योतिष, सिद्धात तथा फलित)

8- श्री चन्द्रशेखर सरस्वती संस्कृत महाविद्यालय
नं0 31, ईस्ट मदा स्ट्रीट
लिटल कांचीपुरम

प्राकशास्त्री-प्रथम, द्वितीय
शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय
आचार्य-प्रथम, द्वितीय (साहित्य, नव्यव्या., वेदांत)

9- सीताराम विद्यामंदिर
श्रीरंगम-122,
उम्मामंडप्पम् रोड
त्रिरूचिरापल्ली
तमिलनाडु-620006

प्रथमा-प्रथम, द्वितीय, तृतीय
पूर्वमध्यमा-प्रथम, द्वितीय
उत्तरमध्यमा-प्रथम, द्वितीय
प्राकशास्त्री-प्रथम, द्वितीय
शास्त्री-प्रथम, द्वितीय, तृतीय

======0======